विशुद्ध राष्ट्रवाद को समर्पित प्रमुखतः विचार पाक्षिक

हिन्दु अस्मिता

शुल्क आदि सहयोग देकर, 'हिन्दु अस्मिता' को अधिक सशक्त एवं प्रभावी बनाने में अपना योगदान दीजिए। धन नकद/मनीऑर्डर/बैंक-ड्राफ्ट द्वारा निम्न पते ही भेजिए:-

वार्षिक शुल्क रुपया चालीस। संस्था, संगठन, ग्रन्थालय; वाचनालयों के लिए सुविधा शुल्क वार्षिक रुपया तीस।

विक्रम गणेश ओक

16,एम. आय. जी. (शॉप कम रेसीडेन्स) नन्दानगर, मेनरोड़ इन्दौर (म. प्र.), 452008

वर्ष 1 अंक 4 आषाढ शुक्ल 5, संवत/2048/शके 1913 1991/दि. 16 जुलाई 91 सम्पादक-**विक्रम गणेश ओक (विक्रमसिंह)** पृ. 4, मूल्य 1.50 पैसे वार्षिक रू. 40/-

हे राम ! तुम ही जानत पीर हमारी

देशव्यापी विपक्ष के रूप में उभरी भाजपा

बढ़े-चढ़े मूल्यों में वस्तु का विक्रय कानून के अनुसार अपराध हो सकता है, पर सौदेबाजी करने की विवशता के कारण आरम्भ में बढ़े-चढ़े मूल्य बताना अपराध नहीं होता। इसी प्रकार निर्वाचन से पहले सुख-समृद्धि का सुन्दर-सुखद चित्र अपने निर्वाचन घोषणा पत्र में प्रस्तुत कर मतदाताओं को आकृष्ट करना और निर्वाचित होने पर आश्वासनों की पूर्ण विस्मृति आज की राजनीति में कोई अपराध माना नहीं जाता। भारतीय जनता पार्टी एक राजनीतिक पार्टी है। ऐसे में एक नयी राजनीतिक संस्कृति के निर्माण का बोझ के साथ अपने कंधों पर ढोते हुए भी मुखमण्डल पर आत्मविश्वास की विलक्षण आभा और भविष्य के सत्तासुख की गुदगुदी से उत्पन्न हास्य बिखेरते हुए उसने देश की कोटि कोटि जनता पर बड़ी ही उदारतापूर्वक आश्वासनों की सौगात न्यौछावर की। अन्य दलों से बढ़कर आश्वासनों के ढेर और अनन्यरूप से मोटी चुनाव घोषणा-पत्र पुस्तिका का लोकार्पण करते हुए भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मुरली मनोहर जोशी के चेहरे पर जो हास्य और प्रसन्नता की झलक रही वह सचमुच देखते ही बनती थी वास्तव में प्रशंसा करनी होगी भाजपा नेतृत्व की, कि उसने इस द्वारा दिये गये 'नियोजन' के उपरान्त एक व्यवस्थित, सुनियोजित पद्धति को इस देश के सामने प्रस्तुत किया।

एक ऐसी पद्धति, प्रणाली जिसे देख कर, पत्रकार वार्ता में परोसे व्यंजन को चख कर पत्रकारों ने भी उसकी बार-बार वाहवाही की। विगत चुनावों में भाजपा की योजनाबद्धता और उसे क्रियान्वित करने के लिए कटिबद्ध लाखों रा. स्व. संघ के प्रतिबद्ध स्वयं सेवक, समूचे देश में भावमन्थन हेतु सतत प्रवास पर रहे विश्व हिन्दु परिषद के दशसहस्र साधु सन्यासी बजरंग दल के सैनिक तथा असंख्य भक्तगण, राष्ट्रसेविका वनवासी आश्रम, विद्यार्थी परिषद, भारतीय मजदूर संघ और भारतीय जनता पार्टी के लाखों समर्पित कार्यकर्ताओं की वाहिनियों ने अपार धन को खर्च कर जो एक अभूतपूर्व प्रभाव जनमानस पर छोड़ा वह यही था कि भारतीय जनता पार्टी अब चने चबाते हुए पैदल घूमते रहने वाले भावुक लोगों का दल नहीं है। अब तो वह कांग्रेस से सभी प्रकार से टक्कर देने की क्षमतावाली 'कांग्रेस का विकल्प' इस रूप में स्वयं को गौरवान्वित करने वाली 'मायटी पार्टी' है। और चुनाव परिणामों ने दिखा दिया कि भाजपाइयों की यह परिकल्पना किसी भी प्रकार गलत नहीं थी।

इन चुनावों में कांग्रेस ने 36 प्रतिशत वोट बटोरे तो भाजपा 21.9 प्र. श. वोट लेकर दूसरे नम्बर पर रही। सन् 1984 में भाजपा को लोकसभा में भले ही मात्र दो सीटें और वे भी तेलगु-देशम और जनता पार्टी की कृपा से मिली थी। फिर भी उसने 7.04 प्र. श. अर्थात 2,77,14,479 वोट पाये थे।

1989 में उसने 85 सीटें जीती और 11.49 प्र. श. के हिसाब से 3,41,71,586 वोट प्राप्त किये तो अब 1991 की उसकी लंबी छलांग से सीटों का संख्या बढ़कर 119 हो गयी है और उसने अपने खाते में 21.90 प्र. श. के हिसाब से अनुमा

(शेष पेज 2 पर)

दसवीं लोकसभा हतु निर्वाचन में भाजपा की स्थिति

	सीटों की संख्या	मतदान (प्रतिशत)		सीटें लड़ी	सीटें जीती	सीटें लड़ी	सीटें जीती	वोट प्राप्त (प्रतिशत)	
		1989	1991	1989	1989	1991	1991	1989	1991
भारत	503	62	53	214	85	456	119	11.49	21.90
उत्तर प्रदेश	85		55		8		50	8.30	32.09
गुजरात	26		45		12		20	29.60	51.40
मध्य प्रदेश	40	54	44		27	40	12	39.70	42.00
राजस्थान	25				13	24	11	29.60	41.00
महाराष्ट्र	48				10	32	5	20.59	20 60
बिहार	54				8		5	12.20	17 00
दिल्ली	7	53	47	5	4	7	5	25.84	40.16
कर्नाटक	28		47			28	4	2.78	28.80
हिमाचल प्रदेश	4				3		2	45.25	42.79
असम	14		65				2		8.90
आन्ध्र	42		52			40	1	2.10	8.80
दमनदीव	1						1		
प. बंगाल	42			19		42		1.60	9.50
हरियाणा	10							4.20	4.70
उड़ीसा	21		50			20		1.40	9.70
केरल	20					20		4.20	4.70
तमिलनाडू	39		56			21		0.20	1.40

किसी भी प्रबुद्ध क्रिया का आरंभ प्रबुद्ध संकल्प में ही होता है। इसीलिए मैंने आरंभ से ही, हमारे 'अभिनव-भारत' संगठन के कार्यक्रम का मनः प्रवर्तन और शरीर प्रवर्तन पहले राष्ट्र की मानसिक क्रान्ति और फिर वास्तविक क्रान्ति, पहले प्रबुद्ध संकल्प और फिर सशक्त क्रिया, मनःप्रचार और कृतिप्रचार इस प्रकार अनुक्रम निश्चित किया था।" —वीर सावरकर

वचने किं दरिद्रता

कदाचित् यह प्रथम अवसर है जब देश के केन्द्रीय मंत्री-मंडल के सर्वाधिक चर्चित तीनों ही मंत्री संसद के किसी सदन के सदस्य नहीं है।

प्रधानमंत्री श्री पामुलरापति वेंकट नरसिंह राव अकस्मात् उत्पन्न अवस्था में कांग्रेस (इ) के अध्यक्ष बनाये जाने तथा उस के पश्चात प्रधानमंत्री बनने के कारण सहज ही बहुत चर्चित है महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री श्री शरद गोविंद पवार ने प्रधानमंत्री पद के प्रतियोगी के रूप में जिस प्रकार अपने को प्रस्तुत किया और एक उचित समय पर श्री राव निर्विरोध चुने जाने के आधार पर प्रतियोगिता से हटने की घोषणा के साथ केन्द्रीय मंत्री मण्डल में रक्षा मन्त्रालय जैसा महत्वपूर्ण पद प्राप्त कर एक अच्छी अवधि तक स्वयं को जनचर्चा में बनाये रखा।

इसी क्रम में देश के विख्यात अर्थशास्त्री चा. श्री मनमोहन सिंह तब राष्ट्रव्यापी चर्चा के विषय बने जब 21 जून को केन्द्र में गठित कांग्रेस ई की सरकार में वित्त मन्त्री के रूप में सम्मिलित होने के कुछ ही समय पश्चात 25 जून को डेढ़ घंटे चले एक संवाददाता सम्मेलन में उस सुस्पष्ट कथन को प्रस्तुत किया जिसे कोई राजनेता कभी कर नहीं सकता। वित्तमन्त्री ने अपने वक्तव्य में कहा कि, घोषणा-पत्र तैयार करते वक्त कांग्रेस (ई) विपक्ष में थी। ऐसे ढेर सारे वायदे कर दिए गए थे जिन्हे मौजूदा आर्थिक हालत में पूरा करना नामुमकिन है। हमारे पास अलादीन का चिराग अथवा कोई जादू की छड़ी नहीं है जिसके बल पर हम घोषणा-पत्र के वायदों को पूरा कर दें। स्थिति काफी चिंताजनक और विचित्र है और इससे उबरने के लिए कड़े वित्तीय अनुशासन को सख्ती से लागू करने जरूरत है।

वक्त आ गया है कि अब हम जाग जाए नहीं तो हमें अपनी आर्थिक आमादी गंवानी पड़ सकती है।

एक प्रमुख अर्थशास्त्री, रिजर्व बैंक के गवर्नर, योजना आयोग के उपाध्यक्ष जैसे पदों को गौरवान्वित करनेवाला महानुभवी, राजनेता भले ही न हो पर राजनेताओं की मनोभूमिका को समझता नहीं हो, ऐसा तो नहीं! इसीलिए तो उस संवाददाता सम्मेलन में श्री सिंह पूरे साहस के साथ यह कहने में पीछे नहीं रहे कि यदि देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाना है तो हमें लोकप्रिय नारेबाजी बंद करनी होगी।

अब महज आश्वासनो से काम नहीं चलेगा। इस सिलसिले में नेताओं को दलो की परिधि से ऊपर उठकर सोचना होगा। अन्त में वह यह कहने से भी नहीं चूके कि जजबाती होने से आर्थिक संकट का समाधान ढूंढा नहीं जा सकता।

वित्तमन्त्री के इन दो टूक विचारों से कांग्रेसी नेताओं में खलबली ही नहीं मची तो बौखलाहट तक प्रदर्शित हुई। प्रधानमन्त्री की दृढ़ता और कुशलता ही कदाचित इस प्रकरण में प्रभावी सिद्ध हुई कि, शब्दों के गुबार निकालने से आगे कांग्रेसी नेता नहीं बढ़ सके। अन्यथा गरीबी हटाओ जैसी चुनावी नारेबाजी के अभ्यस्तों के लिए किसी बाहरी व्यक्ति के ऐसे विचारों को सहना बड़ा कठिन ही है।

चुनाव के पूर्व नारे, आश्वासन और नकली मुस्कान के साथ हाथ जोड़ने का अभिनय कर 'मतों' की याचना और चुनाव के उपरान्त नाटक के दृश्य परिवर्तन की भांति पूर्व-व्यवहार को विस्तृत कर सत्तापक्षी या विपक्षी के रूप में दलीय राजनीति नेतागिरी का अभिनय करने वालों के लिए श्री सिंह के विचार सर्वथा अभिनव थे, जिन को वे अभी इतनी शीघ्रता से पचा भी नहीं सकने। इन नेताओं ने ऐसे ही नहीं तो दशकों के अनुभव से पाया है कि,

> 'हस्तादपि न दातव्यं गृहादपि न दीयते।
> परोपकरणार्थाय वचने किं दरिद्रता॥

अपने हाथों से कुछ देना आवश्यक नहीं ना घर में से कोई वस्तु देना पड़े तो ऐसे में दूसरों की भलाई के लिए यदि दो शब्दों का उच्चारण मात्र करना पड़े तो उसमें भला क्यों दरिद्रता दिखायी जाय?

जनता की स्मरण शक्ति वैसे भी दुर्बल बतायी जाती है उसमें भी अब राजनेता यह भी मानने लगे हैं कि उन की विश्सनीयता भी बहुत घट गयी है इसीलिए तो चुनाव घोषणा-पत्रों के प्रकाशन की रस्म-अदायगी से आगे उसके प्रचार को राजनीतिक दल आवश्यक नहीं समझते ओर जनता भी समाचार-पत्रों में प्रकाशित उनके अंको की अपेक्षा वस्तुओं के ताजा भाव देखना उपयुक्त समझती है।

इसीलिए अब चुनाव घोषणा पत्र समाचार पत्रों के पृष्ठों पर चर्चा का विषय नहीं रहे। वित्तमन्त्री के वर्तमान कथन से कांग्रेस (ई) के चुनाव घोषणा पत्र की जितनी चर्चा हो रही है उसके एक छोटे अंश के बराबर तब नहीं हुई थी जब उसे घोषित किया गया था। इस सन्दर्भ में यह कहा जा सकता है कि वित्तमन्त्री के वक्तव्य का प्रभाव वर्तमान ही नहीं तो भविष्य पर भी पड़ने वाला है चुनाव घोषणा पत्र में बढ़ चढ़ कर आश्वासन देना यह तो एक परिपाटी सी बन गई है। और इस परिपाटी का पालन सभी दल करते हैं। पर पता नहीं क्यों, इस बार कांग्रेस (ई) ने अपने आप को समय सीमा से आबद्ध कर लिया।

प्रथम सौ दिनों में यह किया जायेगा, प्रथम तीन सौ पैंसठ दिनों में यह पूर्ण किया जायेगा, प्रथम सात सौ तीस दिनों में यह सम्पन्न होगा, प्रथम एक हजार दिनो में यह हो जायेगा। मानो एक हजार दिनों में कलियुग समाप्त होकर सतयुग आयेगा और आर्थिक-विशेषज्ञ की दृष्टि में यहीं बात आपत्तिजनक थी। अन्यथा सभी दलों ने अभिवचनों की भरमार की है पर अपने आप को किसी समय सीमा से नहीं जकड़ा है। भविष्य में कांग्रेस (ई) भी ऐसे दुःसाहसी प्रयोगों से अपने आप को बचाये ही रखेगी।

राजनीति से असम्बद्ध श्री मनमोहन सिंह जैसे लोग राज नेताओं का मन तो कभी मोह नहीं सकेंगे पर सामयिक साहसी आचरण के द्वारा राष्ट्र के धन की वृद्धि तन को शक्ति और मन को संतोष दे सकेंगे। और राष्ट्र से साधुवाद प्राप्त करेंगे।

(विगत अंक का शेष)

लोकमान्य

धोखे की टट्टी

पुस्तिका वापस लेने में भीरूता का लांछन तो भाजपा पर लगा ही। विशेषकर जिस भाजपा ने खुशवन्तसिंह प्रकरण में इण्डिया टुडे की होली जलाने में शिव सेना का अनुसरण किया उसके लिए भीरूता का लांछन वास्तव में लज्जास्पद था, कदाचित् इसीलिए जहां तक सम्भव हुआ लखनऊ समझौता और लो. तिलक के सन्दर्भ वाली प्रचार पुस्तिका के प्रकाशन-प्रसारण और एसे वापस लेने की कहानी को प्रच्छन्न रखने की पूरी-पूरी चेष्टा भाजपा द्वारा की गयी।

इससे भी बढ़कर कोई कदाचरण भाजपा ने किया है तो वह है अपनी उसी विचारधारा का आगे भी अन्य क्षेत्रों में प्रचार! साप्ताहिक पांचजन्य-5 मई के 'दशघातक आत्मसमर्पण' शीर्षक के सम्पादकीय में इंका, भाजपा, माकपा और बि. प्र. सिंह आदि पर अपने चुनावी घोषणा पत्रों में मुस्लिम कठमुल्लाओं की घिनौनी अलगाववादी शर्तो के आगे आत्मसमर्पण का आरोप लगाते हुए आगे लिखा है कि, "देश का विभाजन 1947 में हुआ था। उसकी नींव 1916 में हुए लखनऊ समझौते में मुस्लिमों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्र की मांग मानकर डाल दी लेकिन गई थी।"

वस्तुतः मुंबई में भाजपा नेता श्री मधु देवलेकर ने जब 10 मई को लखनऊ समझोता और उस के सन्दर्भ ने लोकमान्य तिलक वाली प्रचार पुस्तिका वापस ले ली तो उस अवस्था में साप्ताहिक पांचजन्य सम्पादक परिवार के एक प्रमुख सदस्य में श्री भानुप्रताप शुक्ल को 'राष्ट्रचिन्तन' स्तम्भ में 'गलत कदम' उप शीर्षक से पुनः यह लिखना किसी प्रकार शोभनीय नहीं कहा जा सकता कि—"1916 में लखनऊ में मुसलमानों के साथ कांग्रेस ने राजनीतिक समझौता किया। लोकमान्य तिलक इस समझौते के जनक थे।" संघ-भाजपा परिवार की एक प्रमुख प्रतिष्ठित पत्रिका में पुनः वही प्रकाशन जो पूर्व में वापस किया जा चुका था एक धोखे की टट्टी ही कहलायेगा और इस प्रकार के आचरण से न केवल भाजपा की प्रतिष्ठा को ठेंस पहुचेगी तो उसके एक प्रमुख प्रचार उपकरण की विश्वसनीयता में भी कमी आयेगी।

* * *

(1 पेज का शेष,)

हे राम....

5 करोड़ 91 लाख वोट अंकित करवाये हैं। निश्चय ही भाजपा की यह उपलब्धि इसलिए भी महत्वपूर्ण मानी जायेगी हिमाचल से कन्याकुमारी और कच्छ से कामरूप तक झण्डे भले ही गड़ने से रहे है पर चुनावों में लहराये अवश्य गये थे। उत्तर प्रदेश में तो भाजपा ने एक अभूतपूर्व इतिहास रचते हुए लोकसभा में ही 8 से 50 तक छलाग नहीं तो विधानसभा में 56 से 212 सदस्यों की छांग लगाते हुए लखनऊ पर अपना अधिकार कर लिया है।

गुजरात में भाजपा ऐसे छा गयी कि, राजनीति का क, ख, ग, नहीं जानने वाली दीपिका जीतकर आयी और वह भी बड़ौदा जैसे एक अभिजात्य जागरूक कही जाने वाली महानगरी में! दिल्ली में भाजपा ने अपने खाते में एक सीट जोड़ ली है और हरकिशनलाल भगत को पछाड़ कर श्री राम भगत बैंकुंठ लाल शर्मा 'प्रेम' जैसे जुझारू विश्व हिन्दू परिषद नेता को लोकसभा में प्रतिष्ठित किया है। असम की दो लोकसभा तथा विधानसभा के दस सीटों पर अधिकार करना भाजपा के लिए निश्चय ही प्रशंसनीय है।

बंगाल इंका अध्यक्ष श्री सिद्धार्थ शंकर राय का यह कहना कि भाजपा की सेंध के कारण उनके दल को सांठ सीटें खोना पड़ी और प. बंगाल वाम मोर्चा समिति अध्यक्ष श्री सैलेन दास गुप्ता के द्वारा भाजपा को विधान सभा में मिले मतों के प्र. श. के 1987 में 1.70 से आज 11.30 पर पहुंचने को खतरनाक बताया जाना और उड़ीसा में वोटों का प्रतिशत 1.40 से 9.70 पर पहूंचना एक प्रमाण है कि भाजपा ने पूर्वी भारत में पकड़ बना ली है। दक्षिण में कर्नाटक से भी लगभग एक दशक के उपरान्त भाजपा चार सीटें पाकर मैदानी सफलता अर्जित कर सकी है और आन्ध्र से वह अपने बलबूते पर लोकसभा में एक सदस्य भेजने में सफल हुई है।

केरल और तमिलनाडु में अवश्य भाजपा लगभग यथास्थिति में रही तो उत्तर में हरियाणा से भी ऐसा ही निराशाजनक हाल रहा। बिहार, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश के चुनावी निर्णय भाजपा के लिए सुखद नहीं रहे महाराष्ट्र में शरद पवार ने भाजपा के 'विजय ही विजय है' के स्वप्न-महल को ध्वस्त कर दिया तो मध्य प्रदेश, राजस्थान की पराजय वहां की भाजपा सरकारो की भूले हिलाने लगी है। और हिमाचल प्रदेश में एक सीट के खोने का गम नहीं पर विगत चुनाव की तुलना में 2.46 प्र. श. वोटों की, समूचे देश में अन्यत्र कहीं भी न हुई घटत भाजपा के लिए एक सदमा है। ऐसे सदमें और सुखद अनुभूतियां किसी समर में होना तो सामान्य बात है।

पर भाजपा के आज तक के इतिहास में यह निश्चय ही असामान्य बात है कि इस निर्वाचन में भाजपा एक देशव्यापी विपक्ष के रूप में उभरी है।

जन्मभूमि आंदोलन के सेनापति की 'बातचीत' से बातचीत !

(विगत अंक का शेष, गातांक से आगे]

पाकिस्तान के हिन्दू प्रीतिनिधि मण्डल ने उस विराट विश्व हिन्दू सम्मेलन में जो कुछ कहा था वह हमारे लिए अत्यंत लज्जा का विषय था। पर इस बात से नकरा किया नहीं जा सकता कि वह एक वास्तविक स्थिति-दर्शन ही था। जब अध्योधा में रामजन्मभूमि का शिलान्यास किया गया तो पाकिस्तानी पंजाब की प्रादेशिक विधानसभा ने उसके विरुद्ध प्रस्ताव पारित किया। क्वेटा में मुस्लिम लीग ने तीन दिन तक विरोध दिवस मनाया। पाकिस्तान की प्रधानमंत्री बेनजीर भुट्टों ने भारत के मुसलमानों के मारे जाने पर चिंता जतायी। हिन्दु मन्दिरों और घरों-दुकानों में लूट मार और आगजनी तो होना ही थी। बांग्ला देश में भी १७ नवम्बर को जुम्में की नमाज के बाद जिहादी जुलूस, हिन्दू मन्दिरों पर हमले, लूटपाट-आगजनी का ताण्डव हुआ। ईरान और सऊदी-अरेबिया में भी शिलान्यास का विरोध हुआ। नेपाल में मुसलमानों ने दंगे किये। और यही सबकुछ कश्मीर और भारत के अनेक प्रदेशों में भी हुआ। यह जो कुछ हुआ उससे विश्व इस्लामी मानसिकता का परिचय पुनः एक बार प्राप्त हुआ

आडवानी की सोमनाथ से अयोध्या रथयात्रा और आगे अयोध्या में कारसेवा के विराट प्रयास की प्रतिक्रिया मैं लाहौर हाईकोर्ट के वकीलों ने एक प्रस्ताव पारित कर मांग की पाकिस्तान भारत से राजनियक संबंध समाप्त करें।

सिंध और बलूचिस्तान में मंदिरों पर हमले तो हुए ही पर साथ ही लाहौर में आयोजित इकबाल दिवस के समारोह में प्रधानमंत्री नवाज शरीफ की उपस्थिति में, प्रोफेसर परेशान खटक ने कहा कि–" मैं पूछता हूं कि क्या बाबरी मस्जिद में रखी मूर्तियों को तोड़ने के लिऐ दोबारा कोई मेहमूद गजनवी और एहमद शाह अब्दाली आएगा।"

बंगला देश में तो मुसलमानों ने कहर ढ़ाया। हजारों हिन्दू परिवार अपनी घर-गृहस्थी छोड़ पलायन करने को विवश हुए। अनगिनत मन्दिर नष्ट-भ्रष्ट किये गये। इसकी भीषणता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि अकेले चितगांग नगर में पूरे 1248 मन्दिर नष्ट कर दिये गये। इन इस्लामी देशों में हिन्दूओं पर अत्याचार की लहरें उठते ही रहती है और पीड़ित हिन्दू भारत में शरण लेने को आज पाकिस्तान बन जाने के 44 वर्षों के उपरान्त भी विवश है।

अशोकजी ! आप जन्मभूमि मन्दिर निर्माण को भले ही धार्मिक नहीं माने पर इस्लामी तो उसे हिन्दू धार्मिक मानते हुए उसकी मजहबी प्रतिक्रिया में सदा सनध रहता है। ऐसे में विश्व में हिन्दुओं के राजनेतिक पीड़न के आक्रोष को आप अपने श्रवणेन्द्रियों के माध्यम से मन मस्तिष्क तक जाने से अवरूद्ध करने में सफल हो सकेंगे ? और यदि सफल हो भी जाय तो भी आप की आत्मा शांत सन्तुष्ट रहेगी ?

इसी सम्दर्भ में, एक व्यावहारिक राजनीतिक उपाय के रूप में, सऊदी अरब और पाकिस्तान की नीति-व्यवहार के प्रत्युत्तर में, भारत के मुसलमानों को द्वितीय श्रैणी का नागरिकत्व देने उन्हें मताधिकार से बंचित करने की राजनीतिक बात जब आप के सम्मुख आती है तो तत्क्षण ही आपकी राजनीति निरपेक्षता का भंग क्यो और कैसे हो जाता है और आप कह उठते है कि, "नहीं, हम यह कभी नहीं करेगे। यह हिन्दुत्व के विरुद्ध होगा, जो सबसे समान व्यवहार सिखाता हैं।" शत्रुता करने वाले से भी समान व्यवहार सिखाता है हिन्दुत्व ? भारत माता का विखण्डन कर पुन खण्ड-खण्ड करने की चेष्टा करने से भी समान व्यवहार सिखाता है हिन्दुत्व ?

हमारे आराध्यों की बुतशिकनी करने वालों से, बुतशिकन बाबर के वंशज कहलानेवालो से भी समान व्यवहार सिखाता है हिन्दुत्व ? छल-बल से धर्म परिवर्तन करने वालों से भी समान व्यवहार सिखाता हैं हिन्दुत्व ? मन्दिरो को भ्रष्ट कर बनायी गयी मस्जिदों के स्थान पर पुनः मन्दिर प्रतिष्ठित करने वाले वीर शिवाजी का हिन्दुत्व, पंढरपुर के श्री विठोबा भगवान, कोल्हापुर की माता अम्बाबाई के मन्दिरों का विध्वंस करने वाले दगाबाज अफजलखान को दण्ड देने वाले वीर शिवाजी का हिन्दुत्व असमान व्यवहार सिखाने वाला हिन्दुत्व है ! अर्थात आपके सामने समान व्यवहार सिखाने वाले हिन्दुत्व के सर्वथा विरूद्ध ! अब आप को वीर शिवाजी का हिन्दुत्व भी स्वीकार्य नहीं ? 'शठं प्रति शाठ्यम' का राजनय भी स्वीकार्य नहीं ? इसे ही कहते है 'सदगुणविकृति' !

इसी सदगुणविकृति के कारण पृथ्वीराज चौहान प्राण गवा बैठे। और उस प्रकार के उस वीरबर के बलिदान से इस देश के इतिहास के प्राण दुर्बल हुए ! क्या हम इतिहास से कोई पाठ सीखना नहीं चाहते ? धर्म–मजहब के आधार पर देश विच्छेदन इतिहास है। इस देश विच्छेदन हेतु 'डायरेक्ट एक्शन' एक इहिहास है, उसे करनेवाले उस इतिहास के पात्र हैं।

उस नरसंहार की बलि चढ़नेवाले भी उसी इतिहास के अभागे अज्ञात पात्र हैं। पाकिस्तान का निर्माण सिंध, और बंगाल के मुसलमानों ने ही नहीं किया था। उस विद्रोह के सूत्रधार तो उत्तर-प्रदेश से ही थे। मुश्किल से 30-35 लाख मुसलमान पाकिस्तान हिजरत कर गये और करोड़ों यही खंडित भारत में रहे यह इतिहास है और संख्या में फल-फूल रहे हैं— यह वर्तमान है 'आज उस इतिहास को हम यदि विस्मृत कर दे और इस वर्तमान को न समझे या समझते हुए भी न स्वीकारें तो हमारे समान अभागे इस धरती पर न होंगे। हम इस स्वाधीन भारत के जनतन्त्र का सम्मान करते हैं, संविधान का सम्मान करते है, अपने स्वाधीन राष्ट्र में विद्रोह को पाप समझते हैं, इसी लिए संविधान के अन्तर्गत राष्ट्रविभाजकों को प्रदत्त नागरिकता और मताधिकार का प्रयोग करने दे रहे हैं। पर हम इस वास्तविकता की अभिव्यक्ति से पीछे नहीं हट सकते कि देश का विखंडन कर पृथक राष्ट्र बनाने वालों को भी इस भारत राष्ट्र में समान नागरिकता और मताधिकार नहीं दिया जाय। हां उन्हें ये अधिकार तब अवश्य दिए जा सकते हैं जब यह भारत अखण्ड हो जाय और वे भी उसी अवस्था में कि, वे लोग अपनी पृथक राष्ट्रीयता पर पश्चात्ताप कर देश को अखण्ड बनाने में जी जान से जुट जाय यहां इस बात का स्पष्टीकरण भी आवश्यक प्रतीत होता है, कि जब अशोकजी इस प्रकार की समानता की बात करते हैं तो कांग्रेसी तथाकथित धर्मनिरपेक्षता और उनकी अपनी विशुद्धता की छाप लगी धर्मनिरपेक्षता में किंचितमात्र भी अन्तर नहीं है।

बांग्ला देश और पाकिस्तान में हिन्दुओं की दुर्दशा पर आप डेढ़ करोड़ बांग्ला देशी मुसलमान घुसपैठियों को वापस बांग्लादेश भेजने के लिए कहेंगे। किससे कहेंगे ? क्या इस प्रकार कहने के लिए किसी मुहूर्त की प्रतीक्षा है ? इसके बाद अगर बांग्ला देश और पाकिस्तान में रह रहे हिन्दुओं पर अत्याचार बन्द नहीं हुए तो आज जनसंख्या की अदला-बदली की मांग करेंगे। चार दशक तो बीत चुके इस सारी प्रक्रिया में जिसको अभी आरम्भ होना है और चार-छह दशक तो लगेंगे ही। तब तक आप क्या सोचते है देश में धर्मनिरपेक्ष प्रतिपक्ष मूक बना बैठा रहेगा और पाकिस्तान बांग्ला देश प्रतिक्रिया-विहीन रहेगा ? यदि आप हृदयान्तर से, हिन्दु-अस्मिता की रक्षा को कृतसंकल्प है तो इस यदि-बदी से, मुहूर्त देखने की बातों से काम नहीं चलेगा, तो शुभस्य शीघ्रम से काम चालू कर संकल्प-पूर्ति आवश्यक है।

अशोकजी, भारत में आप को दो तरह के मुसलमान दिखाई देते है-एक भारत का इस्लामीकरण चाहने वाले कठमुल्ले और दूसरे भारत की मुख्यधारा में शामिल होने की इच्छा रखने वाले। देश का इस्लामीकरण करने वालों को आप किसी भी सूरत में सहन नहीं करेंगे ये आप के भाव है। पर प्रश्न यह है कि आप भारत में रहने वाले करोड़ों मुसलमानों का परिक्षण किस 'मीटर' से करेंगे ? क्या आपने किसी ऐसे मानक मापदण्ड की खोज की है ? या अभी इस पर शोध किया जानेवाला है ? अशोकजी, 'नागरिकता' अवश्य व्यक्तिगत आधार पर होती है। पर 'राष्ट्रीयता' तो समष्टिगत' ही होती हैं। और मजहबे इस्ला के अनुसार "मुसलमान का कोई स्वदेश नहीं यदि है तो वह भूखं जहां ईश्वरीय 'शरीअत' स्थापित हो। इस्लाम की दृष्टि से मुस्लिम की कोई जातीयता नहीं होती यदि उसकी कोई जातीयता है तो वह केवल वह आस्था एवं धारणा है जिसके अन्तर्गत वह दारुल इस्लाम (इस्लामी भूभाग) में मुस्लिम समुदाय का एक सदस्य होता है। एकेषरवाद की आस्था एवं धारणा इस समुदाय की राष्ट्रीयता है। कुरान इसका संविधान है।" ये विचार भारत के किसी मुस्लिम राजनेता के नहीं तो इस्लाम के सम्बन्ध में एक विख्यात लेखक-विचारक मिस्र के सैयद कुतुब शहीद के हैं विदेशों में ही नहीं तो हमारे भारत में भी मुसलमानों को इस प्रकार के इस्लामी-दर्शन से संस्कारित किया जाता है।

अशोकजी, भारत के मुसलमानों को दो वर्गों में वर्गीकृत करने की आप की परिकल्पना ही भ्रांतिमूलक है। मुसलमान को इस प्रकार के आधार पर वर्गीकृत किया नहीं जा सकता। जिस प्रकार ठंडा और गर्म दो भिन्न वास्तविकताएं नहीं होती तो जो सापेक्षतया ठंडा होता है उसमें ताप की कमी होती है और जो गर्म होता है उसमें ताप का आधिक्य। और ताप की भिन्नता के आधार पर केवल दो नहीं तो अनगिनत स्थितियां हो सकती है। मुसलमान के सम्बन्ध में भी यही प्रकृति का नियम लागू होता है। कुछ चिंतनशील, खुले दिमाग के मुसलमान जैसे मुस्लिम सत्य शोधक समाज के अध्यक्ष श्री सय्यद भाई आज है, तो कल छागला थे, हमारे देश में न सही, पर अल मन्सूर थे, अनहल हक (अह्म ब्रह्मास्मि) के साक्षात्कारी थे। इन सब का हश्र आखिर क्या हुआ और क्यों हुआ यह बताना आवश्यक नहीं। यहां जो बताना आवश्यक है वह यह कि इस्लाम और इस्लामियत की चौखट में ये असामान्य थे, अपवाद मात्र थे। ऐसे अपवाद नियम को सिद्ध भले ही करते हो पर स्वयं भर नियम नहीं होते। इन अपवादों के सम्बन्ध में ही एक बार रा. स्व. संघ के सरसंघचालक स्व. श्री गोलवलकर गुरुजी ने ठीक ही कहा था कि हम इन अपवादों का सम्मान तो करेंगे पर इन अपवादों के कारण भ्रमित नहीं होंगे। सारसंक्षेप यही होगा कि मुसलमान वही होगा जो उस मजहबे इस्लाम का पाबंद होगा जिसकी दृष्टि में न कोई स्वदेश न जाति, न देश है, न राष्ट्र है बस इस्लाम उसके नबी मुहम्मद और उनपर उतरी हुई कुरान और शारिअत। इस प्रकार मुसलमानों में वर्ग नहीं है, वह तो एक है और शेष जो है वे काफिर हैं।

मुसलमानों में उपर्युक्तानुसार दो वर्ग मानने की भ्रांति में, अशोकजी आपने पता नही किस आत्मविश्वास के बल पर बड़ी दमंगीयत के साथ यह कह दिया कि, "अगर मुसलमान मुहम्मद को अपना नबी मानते हैं तो हम देखेंगे कि वे राम और कृष्ण को भी अपना नबी माने।"

कहना होगा कि इस बातचीत में प्रश्नोत्तरो की भीड़ में यही एक ऐसा वाक्य है जो कि राष्टवाद की व्याधि की रामबाण औषधि है। इस देश में जब भी और भी पुरूष इस रामबाण को चलायेगा वही यर्थाथ में इस देश में एक सशक्त रामराज्य का संस्थापक नवविक्रमादित्य होगा। पर यह कथन जितना सरल है, उसे व्यवहार करना उतना ही दुष्कार है। इसलिए कि, इस्लाम के अनुसार नबी-पैगम्बर, ईश दूत वह व्यक्ति होता है जिसके पास अल्लाह की ओर से बहय आती हो। जो अल्लाह की ओर इसके लिए नियुक्त हो कि लोगों तक उसका सन्देश पहुँचाएं और लोगों को सीधा सच्चा मार्ग दिखाए। आप कह सकते है कि राम और कृष्ण ने प्रकारान्तर से यही कार्य किया है।

अशोकजी, आप किसी भी प्रकार की मान्यता क्यों न रखे पर मुसलमान तो अल्लाह की ओर से उतरी कुरान के अतिरिक्त किसी भी बात पर विश्वास नहीं करेगा, भले ही उसके प्राण ही क्यों न चले जाय या उसे कितने ही प्राण क्यों न लेना पडे। और कुरान की सूरे अहजाब में अल्लाह का स्पष्ट आदेश है कि 'हे लोगों ! मुहम्मद तुम्हारे पुरूषों में से किसी के पिता नहीं, परन्तु वे अल्लाह के 'रसूल' और 'नबियों' के 'समापक' है। और अल्लाह को हर चीज का ज्ञान है।" अल अहजाब, आयत 40। तो मुसलमान आज के हमारे राम और कृष्ण को हरगिज नबी या पैगम्बर के रूप में स्वीकार करने वाला नहीं है, हां मुसलमान राम और कृष्ण को इमाम अवश्य मान सकता है। सकता क्यों ? अपनी राष्ट्रद्रोही विषैली वक्तृता के लिये कुख्यात आजमगढ़ के मौलाना ओबेदुल्ला खां आजमी ने विगत माह उत्तर प्रदेश की अपनी चुनावी सभा में श्रीराम को इमाम बताया। 'इमाम' अर्थात 'नायक', 'धर्माचार्य', 'नमाज पढ़ानेवाला'। आप को यदि प्रसन्न होना है तो हो लीजिए ! मई 85 में पाली-राजस्थान में भयंकर जहरीली तकदीर करने वाले मौलाना आजमी ने राम को इमाम माना है। हां, जिस तकरीर में राजीव गांधी, अटलबिहारी वाजपेयी और बालासाहब देवरस के कालमा पढ़ने की वाहियात बात की गयी थी और तकरीर की कैसेटें काश्मीर से कन्या कुमारी तक और कच्छ से कामरुप तक दरिद्र मुस्लिम की झोपड़ी से लगाकार सम्पन्न मुस्लिम के महलो में हजारों की संख्या में बजती रही और जब जुलाई 85 में हमने ही सबसे पहले इन्दौर में इस विषवाणी का भण्डाफोड़ कर देश के प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी, भाजपा अध्यक्ष श्री अटलबिहारी वाजपेयी और रा. स्व. संघ के सरसंघचालक श्री बालासाहब देवरस को ये कैसेटें भेजी। तब कही हलचल हुई

(शेष अगले पेज पर)

डाक पंजीयन क्रमांक IDC/MP/490/91
पत्र पंजीयज क्रमांक 12229/13/391

बड़े लोगों के बड़े प्रमाद (४)

गांधीजी नाथूराम गोडसे प्रकरण

तीन सौ वर्ष पीछे उड़ान भरते हुए वीर शिवाजी के सम्बन्ध में अवांछित, इतिहास-विरुद्ध टिप्पणी करने की खुशवन्ती कलम से और 'बस अब दिल्ली में अपनी हीसरकार बन रही है' इस मरीचिका की दिशा में कुलांचें भरते भाजपाई हिरनों से, महाराष्ट्र के चुनावी वातावरण में कोई खास तूफान इसलिए उत्पन्न नहीं हो सका कि पत्रकार खुशवन्तसिंह ने हवा के रूख को भांप कर 'क्षमा याचना' लिख दी तो भाजपाईयों ने वातावरण में ताप का अनुभव, सामने दावानल की ओर बढ़ने की अपेक्षा 'परीवर्त' करना आवश्यक समझा। पर गांधी हत्या और नाथूराम गोडसे वाले प्रकरण ने महाराष्ट्र के चुनावी वातावरण को झकझोर कर रख दिया। महाराष्ट्र की चुनाव सभाओं में गांधी–गोडसे वाली बात का सूत्रपात किसने कब और कहां किया इसका निर्णय करना उतना ही कठिन है जितना की नदी के सही उद्गम को तलाशना या ऋषि के कुल को जानना। फिर भी इस विषय को उछालने की पहल महाराष्ट्र के तकालीन मुख्यमंत्री श्री शरद पंवार द्वारा एक चुनावी टोटके के रुप की गयी प्रतीत होती है। महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र में चिपलून नगर में 10 मई की एक चुनावी सभा में श्री पवाँर ने मतदाताओं का आवाहन करते हुए कहा कि 'मुख में राम और मन में नाथूराम गोडसे की नीतिवाली भाजपा को इस चुनाव में धूल चटानी है। अगले ही दिन सोलापुर की चुनाव सभा में पवांर ने इस आवाहन को दोहराया और शायद आगे हर सभा में इसी विवाद-राग को आलापते चले गये।

पवांर के चुनावी प्रहार पर प्रतिप्रहार के आवेश से भाजपा ने अपने आप को इसलिए बचाये रखा कि उससे प्रदेश में जातीय विलेश पनप सकता था और चुनाव का वातावरण दूषित होने की भी सम्भावना थी। पर हरेक का आंकलन और सोच एक सी नहीं होती। शिवसेना और उसके प्रधान बालासाहब ठाकरे वैसे भी गरमपंथी माने जाते है। श्री ठाकरे ने औरंगाबाद में शिवसेना प्रत्याशी के समथन मे आयोजित चुनावी सभा में कहा कि म. गांधी की नाथूराम गोडसे के हाथों हत्या को किसी भी तरह उचित नहीं ठहराया जा सकता। लेकिन इस बात में भी कोई शक नहीं कि गोडसे सच्चा देश भक्त था। गोडसे और उन्हीं की तरह अनेक स्वतंत्रता सेनानी देश के विभाजन से नाराज थे। इस विभाजन के बाद पाकिस्तान से आये हिन्दु-शरणार्थी अत्याचार के शिकार हुए थे, पर बावजूद इसके म. गांधी पाकिस्तान को आर्थिक मदद देने पर अड़े रहे।' भाजपा के नेता लगता है मन ही मन प्रसन्न थे सोच रहे हो अच्छा है ठाकरे पवांर को निपटा रहें है। लगता है इस जुगलबदी का आनद सभी उठा रहे थे, सहसा राजनीति के दोनो कलाकारों के हौसले बुलन्दि के पायदान चढ़ने लगे। और फिर गुरुवार 16 मई को पुणें में भाजपा प्रत्यशी अण्णा जोशी की चुनाव सभा में बालासाहब ठाकरे ने अपने प्रभावी उद्‌बोधव में कहा कि नाथूराम गोडसे पर हमें शर्म नहीं तो गर्व होता है। नाथूराम और राम की तुलना करनेवालों से मेरा यह सवाल है कि वे यह बताये की नाथूराम ने क्या गलत किया। इस देश का एक बड़ा भारी हिस्सा आढग किया गया और ऊपर से 55 करोड़ रूपये देने पड़े। ऐसा व्यक्ति यदि रहता है तो देश के टुकड़े होंगे इससे रुष्ट होकर नाथूराम अग्रसर हुआ और उसने देश को बचाया। इसलिये हमें उस पर गर्व है।" पुणें में अलका टाकिज चौराहे पर पच्चीस हजार की महती सभा म श्री ठाकरे ने अपन पोन घण्टे के भाषण में जब ये भावनायें घोषित की तब पूरे भाषण के दौरान पूरी भीड़ कभी नारे लगाती रही, तो कभी भगवा झण्डे लहराती रही उल्लेखनीय है कि सभा का पुणें लोकसभा क्षेत्र से भाजपा के प्रत्यशी अण्णा जोशी, महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा के महामत्री धरमचन्द चोरडिया तथा सुधीर जोशी, प्रतिभा लोखंडे आदि ने भी संबोधित किया। भाजपा के इन नेताओं ने बालासाहब ठाकरे के विचारों से न तो कोई असहमती व्यक्त की न ही कोई प्रतिवाद किया। वे सब इस कथन से मानो मौन सहमती ही जता रहे थे।

लगता है पुणे की जनसभा में बालासाहब ठाकरे द्वारा व्यक्त विचार पहले से कुछ अधिक स्पष्ट थे और पुणें में उनका प्रकट होना कुछ विशेष अर्थ और महत्व रखता हो इसलिए भाजपा के वरिष्ठ नेता विचलित हो मुखरित हुए। भाजपा नेता लालकृष्ण आडवानी ने पत्रकारों के सम्मुख अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि "महात्मा गांधी की हत्या एक घृणित पाप था।" आवश्यकता से अधिक सफाई पेश करते हुए तब आडवाणीजी ने यह भी कहा कि, महात्मा गांधी की हत्या के समय भाजपा नहीं बनी थी, पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इस कृत्य की निंदा की थी।" भाजपा के दूसरे वरिष्ठ नेता अटल बिहारी वाजपेयी ने अपनी प्रतिक्रिया मे कहा कि, 'हम ऐसे किसी बयान को बर्दाश्त नहीं करने वाले। लोकतंत्र में हिंसा की कोई जगह नहीं होनी चाहिए। भारतीय जनता पार्टीकीराय में महात्मा गांधी की हत्या अपराध थी और हमें उनका समर्थन करने वाला कोई साथी नहीं चाहिए।"

कांग्रेसी जनता, कम्यूनिस्ट आदि अनेक नेताओं ने जब ठाकरे के कथन की भर्त्सना की और अपने द्वारा सुलगायी गयी रार जंगल की आग की भांति फैलती देख शरद पवांर ने ठाकरे के कथन की मात्र निंदा ही नहीं की तो महाराष्ट्र में कांग्रेस के चुनावी पोस्टरों में इस बात को सबसे ऊपर और प्रभावी रूप में प्रस्तुत किया। हमारे देश की राजनीति के स्तर को देखकर दुख होता है कि, प्रधान मंत्री की कुर्सी पर बैठने के सपने पालने वाले मध्य प्रदेश के कांग्रेसी नेता अर्जुनसिंह ने दूरदर्शन पर सोमवार 17 जून की प्रातः वाले चुनाव-विश्लेषण में, भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री गोविन्दाचार्य के कथन पर: आयोजको द्वारा पूछी गयी प्रतिक्रिया में, मूल विषय से कोई सम्बन्ध न होते हुए भी कहा कि, "गोडसेवाद को राष्ट्रवाद कहा जायेगा। गोडसे की दलील थी कि गांधी-हत्या राष्ट्र की रक्षा के लिए की गयी।" इस मौके से फायदा उठाते हुए जद नेता रामविलास पासवान ने भी कहा कि, शिवसेना ने कहा कि गांधी की प्रतिमा हटा कर गोडसे का लगायेंगे',

गांधी-गोडसे प्रकरण में बालासाहब ठाकरे पर भाजपा का दबाव जब बहुत अधिक बढ़ा तो उन्होंने प्रेस को बलि का बकरा बना दिया। हालांकि आज का प्रेस ऐसी बातों को प्रतिष्ठा का प्रश्न नहीं बनाता और न ही इस प्रकरण में उसने बनाया ही। ठाकरे ने मुंबई में एक पत्रकार वार्ता में कहा कि, "मैंने महात्मा गांधी के बारे में कुछ भी नहीं कहा है। प्रेस ने बात का बतंगड़ बना दिया है। गांधीवादी विवाद को हवा दे रहें है, चुनाव खत्म होते ही गोडसे विवाद भी भुला दिया जायेगा।' ठाकरे का कथन एकदम सटीक और सही था। इस प्रकरण को महज चुनावी लाभ के लिए उछाला गया था और इसी क्रम में 22 मई को हड़पसर-पुणे की एक सभा में शरद पवांर के वक्तव्य से उन के मन में अब तक प्रच्छन्न रहा रहस्य भी उजागर हो गया। श्री पवांर ने तब अपने भाषण में भाजपा का आवाहन करते हुए कहा कि भाजपा ने बार-बार गांधीवादी विचारधारा के प्रति आस्था व्यक्त की है। उसे शिवसेना के साथ सारे सम्बन्ध तोड़ लेना चाहिए।' भाजपा पवार के इस कूटजाल में तो नहीं फंसी पर पवार इस शिगूफे के सहारे महाराष्ट्र में कांग्रेस की चुनावी नेया को पार लगाने में सफल हुए।

देखिये ! यही है 'भारत छोड़ो' आन्दोलन की अभिनन्दनीय सफलता

(हिन्दु राष्ट्र अग्रणी दीपावली विशेषांक-1945 (सम्पादक पं. नाथूराम गोडसे) में प्रकाशित व्यंग्यचित्र)

[३ पेज का शेष]

सरसंघचालक श्री बालासाहब देवरस को ये कैसेटें भेजी। तब कहीं कुछ हलचल हुई, कैसेटों की धरपकड़ हुई बताइये अशोकजी, इसमौलाना का राम के नाम इमामत का आँफर आप को स्वीकार है ? या आप मुसलमानो से राम और कृष्ण को नबी कबूलवाने हेतु कृतसंकल्प है, किसी भी कीमत पर ?

और अशोकजी, इस बातचीत में आपने भारत के ग्रामीण और शहरी हिन्दुओं में भेद करते हुए ग्रामीणों को अधिक आध्याज्ञान-सम्पन्न और इस देश के भविष्य के रुप में माना है। तथापि लगभग चार वर्ष पूर्व पाक्षिक पत्रिका माया नवम्बर 1987 प्रथमांक में आवरण कथा के रूप से प्रकाशित 'बातचीत' में पत्रिका के प्रतिनिधि के प्रशन पर प्रतिप्रश्न जड़ते हुए आपने कहा था, "हाँ शहरी और ग्रामीण दोनों हिंदु। हमें इनमें भेद क्यों करना चाहिए ? इस विषय में आगे चर्चा करते हुए आपने ग्रामीण हिंदु को जानकारी न होने से उसे मूर्ख बनाये जाने और शहरी शिक्षित हिंदु को संगठन की महिमा का ज्ञान होने की बात की थी। इस प्रकार चार वर्षो में, इस विषय में आप की धारणा सीधी उत्तर ध्रूव से मानों सुदूर दक्षिणी ध्रूव तक पहुच गयी। इस प्रकार का धारणात्मक स्थित्यन्तर बड़ा आश्चर्यमयी प्रतीत होता है। बातचीत का समापन करते हुए हम यह निवेदन करना चाहेंगे कि, हम ऐसे आश्चर्यो, स्वप्निल आशा-आकांक्षाओं की लहरों पर तैरने की अपेक्षा वास्तविकता के बिरूद्ध ठोस धरातल पर डूबता से बढ़ते रहे तो निश्चिय ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे !

✗आगामी अंक में✗

बड़े लोगों के बड़े प्रमाम-४

★ मुलायमसिंह ने उछाला गांधी-गोडसे विवाद।

★ विशुध्द धर्म निरपेक्षता का पटाक्षेप

पा. हिन्दु अस्मिता-सम्पादक, स्वामी विक्रम गणश ओक (विक्रमसिंह) प्राध्यापक द्वारा विश्वास कर्माशियल एजेन्सी 55/2; माली मोहल्ला, इन्दौर से मुद्रित एवं 'अभिनव भारत प्रकाशन' 16 एम. आय. जी. (शॉप कम रेसीडेन्स) नन्दानगर मेनरोड, इन्दौर मध्यप्रदेश, 452008 से प्रकाशित। दूरभाष 37945।